'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019).
Vol. 7, Issue 3 (B)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
July-Aug.-Sept. 2020

गुरुग्रंथसाहिब में संत नामदेव का स्थान

अप्पासाहेब गोरख जगदाले
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
धर्मशाला -१७६२१५
Email **jagadalcappasaheb@gmail.com**
Mo- 9089868247

'गुरुग्रंथ साहिब' में जीवन के हर पहलू पर मार्गदर्शन करता है। ११ वीं शती से लेकर १७ वीं तक उसमें आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक का विवरण है। संत एवं भक्त की वाणी में ईश्वर भक्ति एवं उसके सत्य रूप स्वरूप, मोह माया के त्याग की प्रेरणा, नामस्मरण एवं मोक्ष की बात कही है। इससे केवल मनुष्य का चरित्र ही न निर्माण होकर बल्कि रामराज्य की संकल्पना साकार होती है। संत नामदेव ने उत्तर भारत में यात्रा कराकर २० वर्ष पंजाब प्रांत में वास्तव्य किया। जिसका प्रमुख आधार 'घुमान' में बाबा नामदेव का गुरुद्वारा स्थित है। संत नामदेव ने भक्ति का प्रसार के लिए पंजाबी एवं राजस्थानी भाषा में पद लिखे हैं। पंजाबी का पूज्यणीय 'सिक्खधर्म' ग्रंथ 'श्रीगुरुग्रंथसाहिब' का संकलन सन् १६०४ में सिक्खगुरु परंपरा के पांचवे गुरु अर्जुनदेव ने किया। उसमें संत नामदेव के ६१ पद सम्मिलित है। ''साहिब' का शाब्दिक अर्थ स्वामी व मालिक होता है तो भी सिक्ख परंपरा में अब यह शब्द रूढ़ होकर सकारात्मक बन गया।"[1]

पंजाबी के गुरु ग्रंथसाहिब में 'शब्द' ही गुरु होने से उसका सतत चिंतन करने से बुद्धि में सत विचार प्रकट होते हैं। जिससे मन मायामोह से दूर रहता है। 'गुरुग्रंथसाहिब' में संत नामदेव के अतिरिक्त छह सिक्खपरंपरा के गुरुओं में नानकदेव, अमरदास, अंगददास, रामदास, अर्जुन देव, तेजबहादुर आदि के साथ अन्य भक्त कवियों की वाणी संकलित है। उसमें हिन्दू-मुस्लिम संत की वाणी तथा अलग-अलग प्रांत के संत की वाणी से समाज में एकता को उजागर करती है। गुरु अर्जुन देव ने रागमाला का संगलन करके संगीत के प्रति विशेष रुचि अभिव्यक्त की है। यह संगीत -तत्व भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिंसा रहा है। डॉ.गुरनाम कौर बेदी का कथन है-"श्रीगुरुग्रंथसाहिब भारतीय चिंतन और संस्कृति का ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह मध्यकाल के शीर्षक भक्तों की वाणी का प्रामाणिक संग्रह है। गुरुगोविंद सिंह जी ने इस महान दार्शनिक रचना को गुरु की पदवी से सुशोभीत किया। गुरुमत धारा का सर्वप्रथम ग्रंथ श्री गुरुग्रंथसाहिब है। गुरुमत आदर्श का संकल्प गुरुओं ने अपनी वाणी में प्रत्यक्ष रूप में प्रकट किया। जबकि भक्तों की वाणी का सम्पादन इस ढ़ंग से हुआ है कि वह वाणी भी गुरुमत विचार धारा का एक अंग प्रतीत होती है।"[2] संत नामदेव का पंजाब में कार्य प्रसिद्धि प्राप्त करना महाराष्ट्र के लिए बड़े गौरव की बात है। संत नामदेव की आदिगुरुग्रंथ साहिब में संकलित वाणी में उनकी 'नाममुद्रा' स्पष्टता से परिलक्षित होती है। उन्होंने पंजाब प्रांत को प्रेम से जित लिया था।

गुरु अर्जुन देव को संत नामदेव वाणी को सम्मिलित करने का प्रमुख उदेश्य रहा है कि बाबा नामदेव के पदों में सामाजिक समता, जातिभेद-रूढ़ि का कडा विरोध, धार्मिक शुद्धता, गुरुकृपा, नामस्मरण की महत्ता, नैतिक आचरण, पाखंड का खंडन, संगीतात्मकता तथा सहजता से भक्ति की महत्ता, विद्रोही स्वरूप आदि विशेष लगा। इसलिए सिक्खों ने संत नामदेव के पदों को धार्मिक प्रतिष्ठा दी। इस परंपरा के तत्व बाद के निर्गुणवादी कवियों में कुछ अधिक प्रखरता से प्रकट हुए।

Scanned by TapScanner

गुरुग्रंथसाहिब में नामदेव की समझनेवाली पद है, उस पद में विट्ठल व गोविंद या नाम की अपेक्षा राम शब्द अधिक बार प्रयुक्त हुआहै। उसमें कुछ पद निर्गुण पर है तो कुछ गुरु भक्ति परक है। विट्ठल नाम का उल्लेख पाँच-छह पद में आता है परंतु राम का उल्लेख पंद्रह-बीस पद में आता है। संत नामदेव का रामभक्ति की महिमा आंतरिक स्नेह व्यक्त करते है-

रामनाम मेरे पूजी धना। ता पूंजी मेरी लागी मना।।
यहू पूंजी है अगम अपार। ऐसा कोई न साहूकार।।
साह की पूंजी आवै जाइ। कबहु आवै मूल गंवाइ।।
जारी जरै न काई पाइ। राजा डंडै न चोर ले जाइ।।
अलप निरंजन दीन दयाला। नामदेव की धन श्रीगोपाला।।[3]

उक्त पद में संत नामदेव कहते है कि रामनाम मेरे मन की पूंजी है परंतु वह पूंजी क्षणीक न होकर कालातीत है। जिसे खरीदने के लिए कोई साहूकार कितना मोल ही क्यों न करे परंतु उसे खरीद नही सकता है और उसे किसी शासक एवं राजा तथा कोई चोर का डर नही है। क्योंकि वह धन श्रीहरि का नाम है। संत नामदेव ने नैतिक आचरण के संदर्भ को उजागर करने वाली पंक्तियाँ है-

परधन परदारा परहरी। तिनके निकटी बसै नरहरी।।
प्रणवत नामदेव नांका बिना। न सोहै बतीस लखना ।।[4]

उक्त पद में संत नामदेव ने समाज में मनुश्य पर स्त्री तथा परधन को दृष्ट बुद्धि व वासना से देखता है। उससे हरि दूर रहता है। यह मनुष्य का मानवीदेह क्षणभंगुर है। मनुष्य को परधन का लोभ करने से हानी होगी। इस कारण हरि का नाम से मानवता का उद्धार होता है। संत नामदेव ने सच्चे भाव की भक्ति ओर हरि के प्रति अंतः करण से प्रेम प्रकट होना आवश्यक है। किसी तरह का पाखंड नहीं होना चाहिए।

भाव भगति मन में उपजावै। प्रेम प्रीति हरि अंतरि आवै।।[5]

संत नामदेव ने हिन्दू-मुस्लिम के धार्मिक पाखंड पर प्रहार किया है।

हिन्दू अना तुरकू काणा दोहा ते गिआना सिआणा।।
हिन्दू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत।।
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीत।।[6]

संत नामदेव ने मराठी के साथ हिन्दी में गुरु भक्ति की महिमा का गायन किया।

जऊ गुरुदेउ त मिलै मुरारी। जऊ गुरुदेउ त उतरे पारि।।
जऊ गुरुदेउ त बैकुंठ तरै। जऊ गुरुदेउ त जीवत मरै।।[7]

संत नामदेव को गुरु के रुप में विसोबा खेचर मिलने से उनका पूरे जीवन की व्यथा दूर होकर जगत का उद्धार हुआ। तत्कालीन समय में धर्म के नाम पर पशु बली दी जाती थी। उसी पर प्रहार किया है-

कहा करू जग देपत अंधा। तजि आनंद बिचारै धंधा।।
पाहन आगै देव कटीला। बाको प्राण नहीं बाकी पूज रचिला।।
निरजीव आगे सरजीव मारै। देपत जनम आपनौ हारै।।
आंगणि देव पिछौकडी पूजा। पाहन पूजी भए नर दूजा।।
नामदेव कहै सुनौ रे बगड़ा। आतमदेव न पूजौ दगड़ा।।[8]

Scanned by TapScanner

उक्त पद में संत नामदेव कहते हैं कि देश ही अंधा है। जिन्होंने पत्थर के देवता के सामने सजीव पशु की बली देते हैं और देवता के आगे पैर रखकर पूजा करते हैं। घर के आँगन में भूते - - - - परंतु अपने अंदर में बसा ईश्वर को नहीं देख पाता है।

22 / 268

संत नामदेव के मराठी-हिन्दी पदों के गायन की प्रथा है। उनके पदों के नाद, मिठास आ गयी। गुरुग्रंथसाहिब में संत नामदेव के पद में संगीतात्मकता को रागों के माध्यम से गायन किया है, जैसे राग कनडौ ,राग आसावरी, राग भैरू, राग वसंत, राग माली गौड़ी, राग रामगिरी, राग सोरठी, राग गौड़ी आदि अलग-अलग रागों में स्वरबद्ध किया है। संत नामदेव का संगीत के साथ नाद को व्यक्त किया है-

झिलीमिलि झिलिमिलि नूरा रे। जह बाजै अनहद तूरा रे।।
ढ़ोल दमामा बाजै रै। तहां सबद अनाहद माजै रे।।[९]

उक्त पद में संत नामदेव ने अनाहद नाद की बात कहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि संत नामदेव पर कहीं न नाथ संप्रदाय का प्रभाव रहा होगा!

गोविंद गावै गोविंद नाचौ। गोविंद भेष सदा तृति काछै।।[१०]

यह गोविंद की लीला को व्यक्त करता है। पंजाबी बांधव आज भी बड़ी ही तन्मयता से संत नामदेव के पदों का गायन करते हैं। जिसे कीर्तन व सत्संग में गाकर मन को मुग्ध कर देते हैं। संत नामदेव के हिन्दी पद के गायन के संदर्भ में मराठी विद्वान डॉ.अशोक कामत का कथन निम्नलिखित है-" गुरुग्रंथसाहिब में संत नामदेव ने सब रचना राग के संगीत में की है। उन्होंने नामसंकीर्तन में संगीत रचना में नया आशय नया प्रयोजन, नया विस्तार एवं अन्य अध्यात्म की साथ दी।"[११] इससे स्पष्ट होता है कि संत नामदेव के पद में उत्कट भक्ति के साथ संगीतात्मकता के जीवन को मंत्रमुग्ध किया है। 'गुरुग्रंथसाहब' में समानता का भाव उजागर होता है वही प्रवृत्ति का दर्शन संत नामदेव के पद में होता है।

इस प्रकार से गुरुग्रंथ साहिब मध्ययुगीन साहित्य की सम्रगता को व्यक्त करता है तथा वह ज्ञान का सागर कहा जाता है। उसमें मनुष्य जीवन के धरातल पर जितनी गहन अनुभूतियों में उतरता है, वह व्यक्ति आत्मियता से मनुष्य को उतना ऊपर उठता है। संत नामदेव एवं गुरु नानक देव ने यात्रा की थी। उसमें कुछ प्रसंग साम्यता को व्यक्त करते हैं। संत नामदेव ओढ़या नागनाथ के मंदिर में जाते हैं। जहां पर उन्हें कोई बूढ़ा-सा व्यक्ति शिव की मूर्ति पर पैर रखकर सोया दिखाई देता है। संत नामदेव को वह दृश्य देखकर दुःख होता है। इस पर बूढ़ा व्यक्ति संत नामदेव को कहता है तुम ही पैर उठाकर दूसरी जगह पर रख दो जहां ईश्वर की मूर्ति नहीं है! जैसे संत नामदेव पैर उठाते है उनके पैर के नीचे शिव की मूर्ति आती है। इस तरह का हु-बहु प्रसंग बाद में गुरु नानक के साथ विदेश में हज्ज की यात्रा के दौरान घटित होता है। संत नामदेव के यात्रा का प्रभाव पूरे भारत में रहा है क्योंकि पंजाब के साथ राजस्थान, गुजरात आदि की भाषा को काव्य में व्यक्त होती है। उसके पश्चात् अधिक प्रभाव पंजाब के घुमान नामक स्थान पर रहा है। संत नामदेव ने अपना रहन-सहन को उसा रूप में स्वीकार किया था। जहां पर उनका स्मृति केंद्र बना है। जिसे महाराष्ट्र और पंजाब में संत नामदेव की छायांकित चित्र को देखकर दोनों का पता चलता है। उसके लिए मराठी के साथ ही पंजाबी भाषा भी सिखकर उसमें काव्य रचना की। दो प्रांत में भक्ति साहित्य ने आपसी स्नेह पूर्वक संबंध को दर्शाया है। संत नामदेव के काव्य को गुरुबानी में स्थान मिला। जिसका अखंड पाठ महाराष्ट्र और पंजाब दोनों समाज में बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं। इस इस्लाम का प्रभाव नामदेव के साथ पंजाबी साहित्य

6:02 pm
Scanned by TapScanner

पर भी दिखाई देता है। आज भी संत नामदेव के प्रभाव स्वरूप उनके विचार को माननेवाला समाज की संख्या में अधिक है।

निष्कर्ष: संत नामदेव में आस्थामूलक संस्कार महाराष्ट्र में हुए और निर्गुण रूप उत्तर भारत में अधिक विकसित हो गया। संत नामदेव ने विठोबा की भक्ति से सभी जन के लिए एक सामान्य मार्ग का अवलंबन किया। पंढरपुर से ज्ञान का दीप लेकर पंजाब में बाबा नामदेवजी के नाम से स्थापित हो गए। उसे निर्गुण की यात्रा कहा जा सकता है। मराठी संतकवियों ने सगुणभक्ति को प्रथम सीढ़ी के रूप में स्थान दिया। संत नामदेव की यात्रा के बाद निगुण की ओर बढ़ गए। संत ज्ञानेश्वर का योगपिष्ठित स्वीकार किया। इस योग और भक्ति तथा निर्गुण-सगुण के समन्वय हुआ। निर्गुण क सबसे बड़ी उल्लेखनीय बात है। मनुष्य और मनुष्यता के बीच की दरी को मिटाकर उसके लिए संतों ने विचारों की एकता स्थापित की गई।

23 / 268

संदर्भ सूची :

१. सहगल (डॉ.) मनमोहन –गुरुग्रंथ साहिब:एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण, पृ. २१
२. बेदी (डॉ.) हरमहेन्द्र सिंह –पंजाब के हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.सं.५१
३. सं. (महाराष्ट्र राज्य साहित्य–संस्कृति मंडल, मुंबई) सकल संत नामदेवगाथा, अ. सं. २२३४ पृ.सं. ८४०
४. वही, अ. सं. २२३१ पृ.सं. ८३९
५. वही, अ. सं. २२०८ पृ.सं. ८३३
६. वही, अ. सं. २२३४ पृ.सं. ८६४
७. वही, अ. सं. २३२५ पृ.सं. ८६७
८. वही, अ. सं. २२५३ पृ.सं. ८१६
९. वही, अ. सं. २२७६पृ.सं. ८५२
१०.वही, अ. सं. २१४१ पृ.सं. ८१४
११.सामवड़े (डॉ.) मंगला – श्रीनामदेवदर्शन, पृ.सं.१३२

Scanned by TapScanner